HIGH COURT OF JUDICATURE FOR RAJASTHAN
BENCH AT JAIPUR

S.B. Criminal Miscellaneous Bail Application No. 10592/2026
CNR: RJHC020636542026 | URN: CRLMB / 19672U / 2026

Kapil S/o Sh. Babu Lal, Aged About 26 Years, R/o Sanwalpur, Police Station Khandar, District Sawai Madhopur (Raj.). (At Present Confined District Jail Sawai Madhopur).

----Petitioner

Versus

The State Of Rajasthan, Through Pp

----Respondent

For Petitioner(s)	:	Mr. Manvendra Singh Choudhary
For Respondent(s)	:	Mr. Manvendra Singh, PP

HON'BLE MRS. JUSTICE SHUBHA MEHTA

Order

30/10/2026

प्रार्थनापत्र संख्या 01/2026 पर सुना गया।

प्रार्थी की ओर से प्रस्तुत आरोपपत्र की प्रति पर कार्यालय द्वारा इंगित आक्षेप दूर करने हेतु यह प्रार्थनापत्र प्रस्तुत किया गया है।

प्रार्थनापत्र में वर्णित तथ्य व प्रस्तुत तर्क को देखते हुए इस प्रक्रम पर प्रार्थनापत्र स्वीकार किया जाता है तथा कार्यालय द्वारा इंगित आक्षेप दूर करते हुए आरोपपत्र की प्रति को अभिलेख पर लिया जाता है।

प्रार्थी की ओर से धारा 483 भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता के प्रावधानों के अन्तर्गत पुलिस थाना खण्डार में दर्ज प्रथम सूचना रिपोर्ट संख्या 174/2026 अपराध अन्तर्गत धारा 319(2), 318(4), 111(2)(ख) भारतीय न्याय संहिता व धारा 66सी, 66डी सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम में जमानत का लाभ दिये जाने हेतु उक्त प्रार्थनापत्र पेश किया गया है।

बहस सुनी गई। विद्वान अधिवक्ता प्रार्थी–अभियुक्त का तर्क है कि प्रार्थी को प्रकरण में मिथ्या संलिप्त किया गया है। प्रार्थी पर यह आक्षेप है कि उसने सोशल मीडिया पर अधिक निवेश का झांसा देकर लोगों से साईबर ठगी कारित की है। प्रार्थी

के मोबाईल फोन व बैंक खाते के संबंध में समन्वय पोर्टल पर 03 शिकायतें दर्ज होना बताई गई हैं, जो क्रमशः 6,000, 56,868 व 23,991 रूपये की है। प्रार्थी दिनांक 26.06.2026 से अभिरक्षा में है तथा उसके विरूद्ध पूर्व का एक आपराधिक प्रकरण संस्थित होना बताया गया है, जो मारपीट व अनुसूचित जाति/जनजाति के अपराध से संबंधित है। प्रकरण में आरोपपत्र प्रस्तुत हो चुका है तथा अन्वीक्षा में समय लगेगा। अतः प्रार्थी को जमानत का लाभ प्रदान किया जावे।

इसके विपरीत योग्य लोक अभियोजक का तर्क है कि प्रार्थी–अभियुक्त पर संगठित रूप से किये जाने वाले साईबर अपराध का अभियोग है। प्रार्थी के मोबाईल नंबर व बैंक खाते के विरूद्ध समन्वय पोर्टल पर 03 शिकायतें दर्ज होना पाई गई हैं। प्रार्थी द्वारा कारित अपराध गम्भीर प्रकृति का है। अतः जमानत प्रार्थनापत्र निरस्त किये जाने का निवेदन किया।

प्रस्तुत तर्कों पर मनन किया। पत्रावली का ध्यानपूर्वक अवलोकन किया गया। प्रार्थी के मोबाईल फोन व बैंक खाते के संबंध में समन्वय पोर्टल पर 03 शिकायतें दर्ज होना बताई गई हैं, जो क्रमशः 6,000, 56,868 व 23,991 रूपये से संबंधित है। प्रार्थी दिनांक 26.06.2026 से अभिरक्षा में है। प्रार्थी के विरूद्ध जो पूर्व का एक आपराधिक प्रकरण संस्थित होना बताया गया है, वह मारपीट व अनुसूचित जाति/जनजाति के अपराध से संबंधित है। प्रकरण में आरोपपत्र प्रस्तुत हो चुका है तथा अन्वीक्षा में समय लगने की सम्भावना से इनकार नहीं किया जा सकता है। अतः उपर्युक्त तथ्यों–परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए इस स्तर पर मामले के गुणावगुण पर कोई टिप्पणी किये बिना, प्रार्थी–अभियुक्त की ओर से प्रस्तुत जमानत प्रार्थनापत्र **सशर्त** स्वीकार किया जाना उचित प्रतीत होता है।

परिणामतः प्रार्थी–अभियुक्त की ओर से प्रस्तुत जमानत प्रार्थनापत्र इस शर्त के साथ कि प्रार्थी–अभियुक्त भविष्य में इस प्रकार के अपराध की पुनरावृत्ति नहीं करेगा, स्वीकार किया जाता है और आदेश दिया जाता है कि यदि प्रार्थी–अभियुक्त इस मामले में योग्य विचारण न्यायालय के संतोषप्रद, उनके न्यायालय में नियत तिथियों पर एवं जब भी उसे बुलाया जाए, उपस्थिति हेतु एक लाख रूपये का बन्ध–पत्र एवं पचास–पचास हजार रूपये की दो प्रतिभूतियां प्रस्तुत कर तस्दीक करवा दे तथा उसकी किसी अन्य प्रकरण में आवश्यकता न हो, तो उसे जमानत पर रिहा कर दिया जाये।

प्रार्थी–अभियुक्त को यह भी निर्देश दिये जाते हैं कि वह प्रकरण के विचारण तक संबंधित पुलिस थाने में प्रत्येक दूसरे माह (alternatively) की 10 तारीख तक अपनी उपस्थिति दर्ज करायेगा। संबंधित थानाधिकारी उसकी उपस्थिति का विवरण प्रत्येक दो माह पश्चात् विचारण न्यायालय में प्रस्तुत करेगा। अभियुक्त द्वारा उक्त शर्त की पालना नहीं करने पर विद्वान लोक अभियोजक अभियुक्त के जमानत निरस्तीकरण के संबंध में प्रार्थनापत्र प्रस्तुत करने को स्वतंत्र रहेंगे।

(SHUBHA MEHTA),J

08/VISHAL SHARMA